विचार बिन्दु

अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु श्रेष्ठ होती है।
–चंद्रशेखर वेंकट रमण

उपराष्ट्रपति धनखड़ का त्यागपत्र और उसके सबक

21 जुलाई 2025 की रात्रि 9:30 बजे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने अपने पद से त्यागपत्र देकर, त्यागपत्र को अपने ट्विटर (एक्स) अकाउंट पर पोस्ट कर दिया। इस्तीफे का कारण ''अस्वस्थता और चिकित्सकीय सलाह'' बताया गया। यह बात अविश्वसनीय लगी क्योंकि उस दिन राज्यसभा के मानसून सत्र का पहला दिन था और उन्होंने उसका सभापति के रूप में अच्छी तरह संचालन किया था। वैसे भी खराब स्वास्थ्य होने पर उपराष्ट्रपति पर रहते हुए कहीं अधिक अच्छा इलाज हो सकता है ना कि त्यागपत्र देने के बाद। जगदीप धनखड़ ने अगस्त 2022 में उपराष्ट्रपति का पद संभाला था और उनका कार्यकाल अगस्त, 2027 तक था।

यदि उनके इस्तीफे का कारण स्वास्थ्य नहीं है तो फिर इसके दो ही कारण हो सकते हैं, पहला यह कि उन्होंने सरकार द्वारा अपनी उपेक्षा के कारण अपमानित महसूस करने से अपना पद छोड़ दिया हो और दूसरा यह कि सरकार ने नाराज होकर उनसे त्यागपत्र देने हेतु कहा हो। अटकलों के अनुसार धनखड़ के अपमानित महसूस करने के कारणों में उन्हें उपयुक्त प्रोटोकॉल सुविधा न मिलना, अमेरिकी उप राष्ट्रपति जे डी वांस की भारत यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात निश्चित नहीं करना आदि प्रमुख थे। इसी प्रकार, सरकार के द्वारा, विशेष कर सरकार के मुखिया की नाराजगी के कारणों में जस्टिस वर्मा के महाभियोग का प्रस्ताव राज्यसभा में उनके द्वारा स्वीकार कर लिया जाना, सार्वजनिक समारोह में कृषि मंत्री शिवराज सिंह की उपस्थिति में सरकार की आलोचना करना, विपक्ष के नेता खरगे को ऑपरेशन सिंदूर और पहलगाम की घटना के बारे में अपनी बात करने का एक अवसर देना, प्रमुख माने जा रहे हैं। सुना तो यह भी जा रहा है कि सरकार ने उन्हें यह स्पष्ट रूप से कह दिया था कि यदि वे तत्काल त्यागपत्र नहीं देंगे तो उन्हें महाभियोग के माध्यम से हटा दिया जाएगा।

हम इस इस आलेख में इसका ज्यादा विश्लेषण नहीं करेंगे कि उनके इस्तीफे के पीछे कारण क्या रहे? कारण कुछ भी रहे हो हों, लेकिन यह त्यागपत्र साधारण नहीं है और इसके कई अर्थ निकलते हैं और इससे कुछ सबक भी लिया जा सकता हैं । उन्हीं की चर्चा हम यहां करेंगे।

जब धनखड़ को बंगाल का राज्यपाल बनाया गया था तब भी सबको आश्चर्य हुआ था क्योंकि वे तो एक प्रकार से राजनीतिक गुमनामी में थे । जो काम उन्हें बंगाल में सौंपा गया, उसको उन्होंने भरपूर तरीके से निभाने का प्रयास किया । उनके लिए यहां तक कहा जा सकता है कि उन्होंने "more loyal than king" के सिद्धांत पर काम किया उन्होंने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को अपमानित करने और उनके काम में बाधा डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसा करते समय उन्होंने सत्ताधारी दल भाजपा को प्रसन्न करने के लिए राज्यपाल पद की सारी गरिमा और निष्पक्षता को ताक पर रख दिया था। इसी 'स्वामी भक्ति' के परिणाम स्वरुप धनखड़ को उपराष्ट्रपति जैसा महत्वपूर्ण पद दिया गया। सरकार के आगे समर्पण के प्रसाद स्वरूप मिले पद को उन्होंने कुछ समय बाद यह मान लिया कि शायद यह उन्हें उनकी योग्यता के कारण मिला है। यही गलतफहमी उनकी इस स्थिति का कारण बनी है। इसका अर्थ यह है कि जब सत्ता द्वारा कोई पद आपकी योग्यता से बड़ा दिया जाय और आपको यह गलतफहमी हो जाय कि वह आपकी योग्यता से मिला है तो शीघ्र ही आपकी गलतफहमी दूर कर दी जाती है। आपकी उपयोगिता नहीं रहने पर आपको दूध से मक्खी की तरह निकाल बाहर कर दिया जाता है। ऐसा करते समय इस बात का भी लिहाज नहीं रखा जाता कि आप उपराष्ट्रपति जैसे किसी महत्वपूर्ण संवैधानिक पद पर बैठे हैं।

इस घटनाक्रम से यह भी स्पष्ट हो गया है कि राजनीति में कोई किसी का सगा नहीं है और 'यूज एंड थ्रो' वाली नीति काम में ली जाती है. भाजपा और प्रधानमंत्री को असहमति कतई स्वीकार्य नहीं है। उपराष्ट्रपति पद पर कार्य करते हुए धनखड़ ने जिस प्रकार का पक्षपात पूर्ण व्यवहार किया, उसने पद की गरिमा और निष्पक्षता को तार-तार कर दिया। इसके बावजूद सरकार द्वारा उनको अचानक पद से हटा दिया गया तो यह स्पष्ट हो गया कि जो व्यक्ति अपने पद से अपेक्षित कार्य करने के बजाय स्वामी भक्त की तरह कार्य और व्यवहार करेगा, उसका कोई दीर्घकालीन लाभ नहीं हो सकता है। उसका वही हश्र होगा जैसा जगदीप धनखड़ का हुआ है।

यह बात नौकरशाहों पर भी लागू होती है। अधिकारी ,राजनीतिक आकाओं की चापलूसी करके महत्वपूर्ण पद भले ही प्राप्त कर लें किंतु जैसे ही वे उनकी मनमानी के अनुसार काम करने से इनकार करेंगे तो उन्हें तत्काल अपमानजनक रूप से हटा भी दिया जाएगा। नौकरशाहों से अपेक्षा की जाती है कि वे निष्पक्षता के साथ संविधान के अनुरूप अपने पद की गरिमा को बनाए रखते हुए जनहित में काम करें। जो सत्ता में बैठे राजनीतिज्ञों को प्रसन्न करने के लिए काम करते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि उनके लिए किसी को भी सदैव प्रसन्न करना संभव नहीं है । इसी कारण सत्ताधारी लोगों के मनपसंद कार्य किए जाने के बावजूद कोई भी एक काम उनके अनुकूल न होने पर उन्हें तत्काल हटा दिया जाता है। गत कुछ वर्षों से देखा गया है कि संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति भी सरकार, विशेषकर उसके सर्वोच्च पद पर बैठे व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए अपने पद की गरिमा को नीचे गिराने का काम करते हैं और पूर्णतया पक्षपात पूर्ण कार्रवाई करते हैं। कई बार ऐसा लगता है कि वे संवैधानिक पद पर नहीं अपितु केवल सरकार के अधीन ही कार्य कर रहे हैं । राज्यसभा के सभापति के रूप में जगदीप धनखड़ ने यह बात कई बार सिद्ध की है। यह बात राज्यपाल, सूचना आयुक्तों, सीएजी आदि पर समान रूप से लागू होती है।

सरकार द्वारा उपराष्ट्रपति के प्रति इस व्यवहार को अमर्यादित बताने वाले यह भूल गए कि धनखड़ ने स्वयं पद पर रहते हुए इस पद की मर्यादा को कई बार तार तार किया था । उनके साथ जो व्यवहार हो रहा है उसे देखकर तो यही कहावत याद आती है कि ''बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय''। यदि आपने स्वयं ने अपने पद की मर्यादा का ध्यान नहीं रखा तो आपको यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि दूसरे व्यक्ति भी आपके पद की मर्यादा की परवाह करेंगे।

आजकल चुनाव आयोग, जो कि पूर्णतया संवैधानिक संस्था है, वह भी सरकार के इशारे पर ही कार्य करता प्रतीत हो रहा है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण बिहार में चल रहा मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण है। इसके बारे में कई समस्याएं और शंकाएं सभी दलों द्वारा व्यक्त की जा रही हैं । इसके बावजूद, चुनाव आयोग इस पर विचार करके इसका हल निकालने के स्थान पर अपनी ही जिद्द में केवल सत्ताधारी दल को खुश करने के लिए इस काम को लगातार कर रहा है। इसके कारण लाखों लोगों के नाम मतदाता सूचियां से कटने की आशंका उत्पन्न हो गई है। चुनाव आयोग में बैठे लोगों को धनखड़ का प्रसंग याद रखना चाहिए कि वे चाहे कितना ही सरकार को प्रसन्न करने का काम कर लें, उनकी छवि तो जनता के हित में किए गए निष्पक्ष कार्य से ही बनेगी।

आज जगदीप धनखड़ की ऐसी स्थिति हो गई है कि उनके लिए औपचारिक रूप से एक विदाई समारोह तक आयोजित नहीं किया गया । उनके द्वारा इस्तीफा दिए जाने के बाद सत्ता धारी दल का कोई भी नेता उनके घर पर उनके हाल तक पूछने नहीं गया। प्रधानमंत्री ने भी बहुत बेरंग सा ट्वीट किया। यह व्यवहार उस व्यक्ति के प्रति है जिसने सत्ता धारी दल के शीर्षस्थ नेताओं को प्रसन्न करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, चाहे इसके लिए उन्हें राज्यसभा के सभापति के रूप में 50 सांसदों का एक साथ निष्कासन ही क्यों न करना पड़ा हो।

सरकार द्वारा उपराष्ट्रपति के प्रति इस व्यवहार को अमर्यादित बताने वाले यह भूल गए कि धनखड़ ने स्वयं पद पर रहते हुए इस पद की मर्यादा को कई बार तार-तार किया था। उनके साथ जो व्यवहार हो रहा है उसे देखकर तो यही कहावत याद आती है कि ''बोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय''। यदि आपने स्वयं ने अपने पद की मर्यादा का ध्यान नहीं रखा तो आपको यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि दूसरे व्यक्ति भी आपके पद की मर्यादा की परवाह करेंगे।

सामान्य नागरिक के लिए भी इस प्रकरण से एक संदेश निकलता है। जब उपराष्ट्रपति पद के महत्वपूर्ण पद पर बैठे व्यक्ति के साथ इस प्रकार का तिरस्कार पूर्ण व्यवहार सरकार के द्वारा किया जा सकता है तो फिर अन्य सामान्य नागरिकों या अन्य पदों पर बैठे व्यक्तियों के साथ यदि सरकार की नाराजगी हो जाए तो उन्हें किस प्रकार से सजा दी जाएगी, यह समझ में आ जाना चाहिए। यही अधिनायक वाद के प्रारंभिक लक्षण हैं।

जगदीप धनखड़ के साथ हुए व्यवहार से यह संकेत स्पष्ट है कि सरकार, विशेषकर प्रधानमंत्री को अपनी इच्छा में बाधक बनने वाले लोग कतई पसंद नहीं हैं। अब, सत्ता के उच्च पद पर बैठे लोगों को नाराज करने का या उनके साथ गुस्ताखी करने का काम, कोई भी नहीं करेगा। यह संदेश देने में प्रधानमंत्री जी बहुत अच्छी तरह सफल रहे हैं। इसके बाद संभावना कम है कि कोई व्यक्ति सरकार के मुखिया को किसी भी रूप में जाने- अनजाने, नाराज करने का साहस जुटा पाएगा।

इस घटनाक्रम का एक सबक यह भी है कि दल बदलुओं को अधिक महत्व नहीं देना चाहिए और विचारधारा में विश्वास रखने वाले पुराने साथियों को सदैव प्राथमिकता दी जानी चाहिए । यह समझना होगा कि जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए एक दल को छोड़ सकता है, तो वह किसी दूसरे स्वार्थ के लिए नए दल को भी छोड़ने में कोई समय नहीं लगाएगा। यह उल्लेखनीय है कि जगदीप धनखड़, कई राजनीतिक दलों से होते हुए भारतीय जनता पार्टी में पहुंचे थे।

महत्वपूर्ण पद पर बैठे हुए व्यक्तियों के लिए सबसे बड़ा सबक यह है कि रीढ़ की हड्डी को सीधी रखना ही उनके स्वयं के लिए लाभकारी होगा। तात्कालिक लाभ के लिए अपने सारे सिद्धांत को छोड़कर केवल स्वार्थ के प्रति समर्पित होकर निर्णय लेने से न तो छवि अच्छी होती है ना किसी प्रकार का राजनीतिक लाभ ही अंततः होता है ।

जगदीप धनखड़ ने पद छोड़ने के बाद कोई सार्वजनिक वक्तव्य नहीं दिया है । सबको इस बात की प्रतीक्षा रहेगी कि वह इस विषय पर क्या कहते हैं? जम्मू कश्मीर के गवर्नर सतपाल मलिक ने जब केंद्र सरकार और मोदी के विरुद्ध अपनी बात सार्वजनिक रूप से कही तो उन्हें किस प्रकार से प्रताड़ित किया गया, यह सबके सामने है । उनके उदाहरण को ध्यान में रखते हुए संभव है, इस संबंध में धनखड़ अपना मुंह नहीं खोलें और चुप्पी ही साध लें। यदि ऐसा हुआ, तो जगदीप धनखड़ का इस्तीफा सदैव रहस्य के आवरण में ही रहेगा और राजनैतिक विश्लेषक अपना अपना कयास लगाते रहेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद का भारतीय संविधान के निर्माण में योगदान

अशोक शर्मा

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद का भारतीय संविधान के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय योगदान रहा है। उनका योगदान विशेष रूप से संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका में परिलक्षित होता है।

संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में भूमिका

डॉ. राजेंद्र प्रसाद को 11 दिसंबर, 1946 को भारतीय संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष चुना गया था। इससे पहले, डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा अंतरिम अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे थे। अध्यक्ष के रूप में, डॉ. राजेंद्र प्रसाद की भूमिका कई मायनों में महत्वपूर्ण थी:–

सदन का संचालन: उन्होंने संविधान सभा की कार्यवाही को निष्पक्ष और व्यवस्थित तरीके से संचालित किया। जटिल बहसों, विचारों के टकराव और विभिन्न राजनीतिक दृष्टिकोणों के बीच उन्होंने संतुलन बनाए रखा। उनकी कुशल अध्यक्षता ने यह सुनिश्चित किया कि सभी सदस्यों को अपनी बात रखने का पर्याप्त अवसर मिले।

सर्वसम्मति और सामंजस्य: संविधान निर्माण एक विशाल और चुनौतीपूर्ण कार्य था, जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और विचारधाराओं के प्रतिनिधियों को एक साथ लाना था। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपने शांत स्वभाव, धैर्य और दूरदर्शिता से सदस्यों के बीच सर्वसम्मति बनाने और सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने विवादों को सुलझाने और सहमति बनाने में मदद की, जिससे संविधान को व्यापक स्वीकार्यता मिली।

समितियों का मार्गदर्शन: संविधान सभा ने विभिन्न समितियों का गठन किया था, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण प्रारूप समिति थी, जिसके अध्यक्ष डॉ. बी.आर. अंबेडकर थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने इन समितियों के कार्यों का मार्गदर्शन किया और यह सुनिश्चित किया कि वे अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करें। वे स्वयं कई महत्वपूर्ण समितियों के अध्यक्ष थे, जैसे:– प्रक्रिया नियम समिति (Rules of Procedure Committee), वित्त और कर्मचारी समिति (Finance and Staff Committee), संचालन समिति (Steering Committee)।

राष्ट्रीय ध्वज पर तदर्थ समिति (Ad-hoc Committee on National Flag)

भारतीय मूल्यों का समावेश: डॉ. राजेंद्र प्रसाद एक गांधीवादी और भारतीय संस्कृति के गहन जानकार थे। उन्होंने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि संविधान में भारतीय परंपराओं, मूल्यों और आकांक्षाओं का समुचित समावेश हो, साथ ही यह आधुनिक और लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित हो।

समयबद्धता का ध्यान: भले ही संविधान निर्माण में लगभग तीन वर्ष (2 वर्ष, 11 महीने, 18 दिन) का समय लगा, लेकिन डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि कार्यवाही अनावश्यक रूप से लंबी न खिंचे और एक निश्चित समय-सीमा में संविधान का मसौदा तैयार हो।

निष्कर्ष– डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता ने संविधान सभा को एक मजबूत और कुशल मंच प्रदान किया, जहाँ भारत के भविष्य के कानून का निर्माण किया जा सके। उनके नेतृत्व में ही 26 जनवरी, 1950 को स्वतंत्र भारत का संविधान अपनाया गया। उनके धैर्य, निष्पक्षता और कुशल संचालन ने भारत को एक ऐसा संविधान दिया जो देश की विविधता को समाहित करता है और उसके लोकतांत्रिक भविष्य की नींव रखता है। उन्हें अक्सर संविधान निर्माण में उनके अपेक्षित सम्मान से कम मिलने की बात कही जाती है, जबकि उनका योगदान अतुलनीय था।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

महात्मा गांधी विद्यालय में 80-90 वर्ष पूर्व बने कमरे गिरने की कगार पर

ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर क्षतिग्रस्त कमरों को हटाने की मांग की

पावटा, (निसं)। विराटनगर के ग्राम पापड़ा में संचालित महात्मा गांधी राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल के कमरों के हालात खराब हैं।

लगभग 80-90 वर्ष पूर्व विद्यालय में सात कमरों का निर्माण करवाया गया था, ज्योकि वर्तमान में क्षतिग्रस्त हो गए हैं और कभी भी गिर सकते हैं। इन कमरों की जर्जर अवस्था को देखते हुए व किसी घटना की आशंका से प्रधानाचार्य द्वारा इन क्षतिग्रस्त सात कमरों को बंद कर दिया है। ये सात कमरे पूरी तरह से जर्जर होने के कारण सुरक्षा के लिहाज से बंद कर दिये गये हैं, ये कभी भी जमींदोज हो सकते हैं। ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार को पत्र लिखकर इन क्षतिग्रस्त सात कमरों को हटवाने की मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि पूर्व में भी कई बार स्कूल के हालात को उच्च अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों के सामने रखा लेकिन हालात नहीं बदले। उच्च अधिकारियों द्वारा अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। ग्रामीणों ने बताया कि यदि भविष्य में इससे कोई जनहानि होती है तो इसकी जिम्मेदारी उच्च अधिकारियों की होगी।

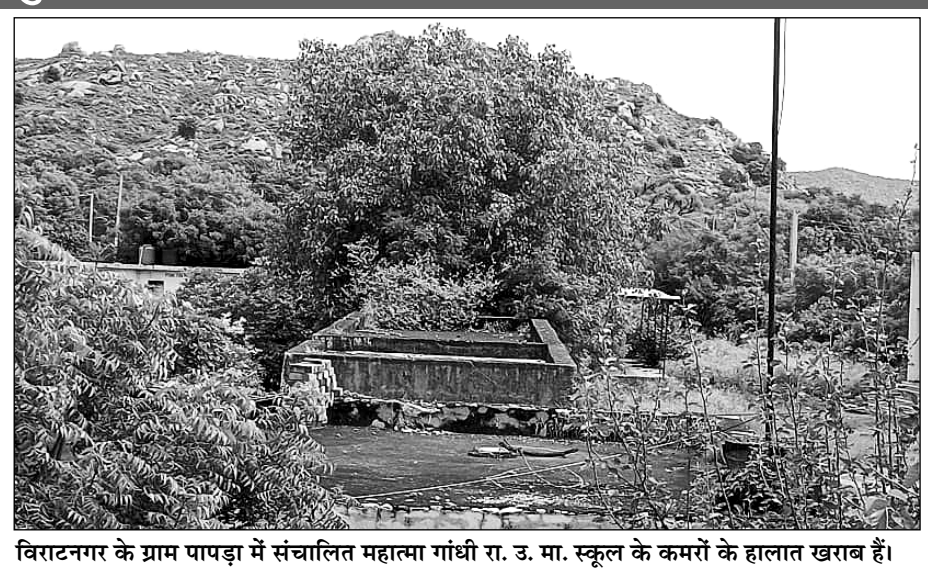

विराटनगर के ग्राम पापड़ा में संचालित महात्मा गांधी रा. उ. मा. स्कूल के कमरों के हालात खराब हैं।

- **घटना की आशंका से प्रधानाचार्य ने इन क्षतिग्रस्त सात कमरों को बंद कर दिया है**
- **ग्रामीणों ने कई बार स्कूल के हालात को उच्च अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों के सामने रखा था**

ग्रामीणों ने जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इन क्षतिग्रस्त कमरों को हटाने की मांग की है। इस दौरान बाबूलाल गुर्जर, पूरण, बनवारी, प्रवेंद्र कुमार, सुवालाल, चेतराम, रामेश्वर, विपन, विकास, कालू, ईश्वर, मदन लाल, जयदयाल, सुरेश, रामकरण सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

''हरियालो राजस्थान अभियान'' के तहत स्कूल के बच्चों को पौधे बांटे

नागौर, (निसं)। नागौर जिला मुख्यालय के निकटवर्ती गांव मांजवास के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में ''हरियालो राजस्थान अभियान'' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के तहत पर्यावरण प्रेमी दीपक कच्छावा द्वारा शाला के सभी बालकों को अपने परिवार, खेत-खलियान परिसर में लगाने के निमित्त पौधे प्रदान किए गए।

पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी अजय शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में भामाशाह डूंगरमल मांजू, सांवताराम मांजू, पन्नालाल कच्छावा, ललित सांखला, डॉ. राजेश्वरी सैनी के आतिथ्य में कार्यक्रम संपन्न हुआ। पर्यावरणप्रेमी दीपक कच्छावा द्वारा नौ वर्ष में सवा लाख पौधे तैयार करके वितरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इसी के निमित्त यह पौधरोपण व वितरण का कार्य संपन्न हुआ।

नागौर के गांव मांजवास के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पर्यावरण प्रेमी दीपक कच्छावा ने बालकों को पौधे प्रदान किए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में दीपक कच्छावा ने ''एक पौधा गुरु के नाम अभियान'' को भी प्रारंभ करने का संकल्प दिलाया, जिसमें बताया कि प्रत्येक शाला शिक्षक के जन्म दिवस पर विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में एक पौधा लगाया जाएगा। डॉ. राजेश्वरी सैनी द्वारा इस अवसर पर घोषणा की गई कि यदि कोई विद्यार्थी 12वीं कक्षा अध्ययन करने के पश्चात आर्थिक अभाव के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर पाए तो स्वामी विवेकानंद कॉलेज नागौर द्वारा उनके लिए निशुल्क का अध्ययन करवाया जाएगा। कार्यक्रम में शाला प्रधानाचार्य संगीता भाटी ने आभार व्यक्त किया, जबकि कार्यक्रम का संचालन महिपाल चारण ने किया। इस अवसर पर कंचन, रेखा, तमन्ना, रुचिता व निवेदिता ने कार्यक्रम अध्यक्ष व उपस्थित भामाशाह, पर्यावरण प्रेमियों के साथ सभी विद्यार्थियों को एक-एक पेड़ मां के नाम लगाने का संकल्प दिलाकर पौधे प्रदान किए। वहीं शाला में पौधरोपण करके विभागीय निर्देशानुसार जिओ टेक किया गया। कार्यक्रम में शाला शिक्षक दयाल सिंह राठौड़, ललित कंसारा, वीरेंद्र सोलंकी, श्रीधर, प्रियंका, विजयलक्ष्मी, श्रवणराम, सुमन निर्वाण, सुनिता, रामस्वरूप बिश्नोई व भगवती प्रसाद ने सहयोग किया।

- **''एक पौधा गुरु के नाम अभियान'' को भी प्रारंभ करने का संकल्प दिलाया**

राशिफल मंगलवार 29 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र सायं 7:28 तक, शिव योग रात्रि 3:05 तक, बव करण दिन 12:06 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग और कुमार योग सायं 7:28 से आरम्भ होगा। आज नाग पंचमी देशाचार से है। आज मंगला गौरी पूजा, जाग्रत गौरी पंचमी है। बुध वक्री सायं 4:24 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:13 से 10:53 तक, लाभ-अमृत 10:53 से 2:14 तक, शुभ 3:53 से 5:35 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:13

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ बनी रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

मीन
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।